अध्याय—2

अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

(2.1) प्रस्तावना

मानव को सतत् प्रयासो से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन में प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से संबंधित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। अनुसंधान की योजना में संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तको, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण शोध के उद्देश्य की प्राप्ति अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

(2.2) संबंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व

वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधार्थी उचित दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि इस क्षेत्र में कितना कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है? तब तक न तो वह समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

अतः इसके महत्व को स्पष्ट करने हेतु निम्न परिभाषा दी है :– "एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आवश्यकता का ज्ञान रखे" उसी प्रकार शिक्षा में जिज्ञासु छात्र–छात्राऍं अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधान के लिये भी इस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

"गुड बार एवं स्केट्स"

"व्यवहारिक रूप से सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों और पुस्तकालओं में मिल जाता है अन्य प्राणियों से भिन्न मानव को अतित से प्राप्त ज्ञान को प्रत्येक पीढ़ी के साथ नये ज्ञान के रूप में प्रारंभ करना चाहिए ज्ञान के विस्तृत भंडार में उसका निरंतर योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गये प्रयासों की सफलता को संभव बनाता है"

"जॉन. डब्ल्यू. बेस्ट"

(2.3) संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

(1) "अग्रवाल (1999):– ने 'असफल उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर' पर शोध किया जिसके निष्कर्ष निम्नलिखित है :–

निष्कर्ष :–

शोध में उन्होंने पाया कि असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर निम्न है उनके अनुसार अभिभावकों का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षणिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

(2) गुप्ता, (1982) मोरल डेबलवमेन्ट ऑफ स्कूल चिल्ड्रेन

उद्देश्य :–

1. स्कूल बच्चों के नैतिक विकास के स्तरों का अध्ययन करना।

2. विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के नैतिक तर्क का अध्ययन करना।

3. उम्र और लिंग के अनुसार बच्चों के नैतिक तर्क के स्कोर का पता लगाना।

4. ग्रेड प्रबंधन, संगठन और लिंग का बच्चो के नैतिक तर्क स्कोर के संबंध में अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. स्तर 1 में (तत्काल परिणाम) तर्क 12 वर्ष (50 से 80 प्रतिशत) की उम्र में बच्चों द्वारा इस्तेमाल किया गया था।

2. स्तर 1 के कारण आयु में वृद्धि के साथ तेजी से गिरावट आई यह पाया गया।

3. स्तर 2 (आंशिक अनुकरण) 12 से 17 वर्ष की आयु में अनुपस्थित पाया गया।

4. सह शिक्षा वाले विद्यालयों में 13 से 15 वर्ष के बच्चों की आयु से धीरे–धीरे वृद्धि हुई पाया गया।

5. सह शिक्षा वाले विद्यालयों में लड़कियां नैतिक तर्क में लड़कों से अधिक बेहतर पायी गयी।

(3) जमीन, (1982) – ए स्टडी ऑफ सोशल रिलीजियस एण्ड मोरल वैल्यूज ऑफ स्टूडेन्ट ऑफ क्लास 11 एण्ड देयर रिलेशन शिप विद् मोरल कैरेक्टर परसनाल्टी एडजेस्टमेन्ट।

उद्देश्य :–

1. कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों धार्मिक, नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

2. मूल्यों का प्रभाव चरित्र उपागम और व्यक्तित्व समायोजन पर किसी प्रकार पड़ता है संबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में धार्मिक मूल्य अधिक मजबूत और सामाजिक मूल्य सबसे कमजोर थे जब कि तीनो मूल्यों के बीच संबंध का गुणांक स्थिति अत्याधिक सार्थक थी।

2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के लिए तीनों मूल्य अधिक उच्च स्तर पर थे जब कि शहरी क्षेत्र के निम्न स्तर पर पाये गये।

3. लडको की अपेक्षा लड़कियों में तीनों मूल्यों अधिक उच्च स्तर पर पाये गये।

4. समस्त तीन मूल्य चरित्र उपागम पर अधिक प्रभाव डालते है तथा सबसे कम व्यक्तित्व समायोजन पर।

5. व्यक्तित्व समायोजन के संदर्भ में सामाजिक मूल्य अधिक प्रभावित करते है।

(4) खान (1969) :–

खान एस.बी. ने शैक्षणिक उपलब्धि के प्रभावी कारकों का अध्ययन किया प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति शिक्षा पद्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिन्ताओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया।

शोध कार्य हेतु 509 छात्र तथा 529 छात्राओं का चयन किया गया तथा 122 तथ्यों के आधार पर शोध कार्य किया गया।

निष्कर्ष :–

विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिवृत्ति शिक्षा पद्धति समायोजन उपलब्धि के चिन्ता का प्रभाव प्राप्त हुआ उपर्युक्त सभी कारको में बलिकाओं का उपलब्धि स्तर शैक्षणिक उपलब्धि की सोच बालकों की अपेक्षा उच्च प्राप्त हुई।

(5) कुमार मुझाल एवं कुमार (2008) :– "उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर शोध किया है।

उद्देश्य :–

उ. मा. विद्यालय कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

शोध में पाया कि उच्च. मा. विद्यालय कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(6) मालवीय , लोहिया (2014) :–

उच्चतर माध्यमिक स्तर के स्काउट्स और सामान्य छात्रों की समायोजन क्षमता, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक कार्यो के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. स्काउट्स तथा अन्य छात्रों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. स्काउट्स और अन्य छात्रों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. स्काउट्स और सामान्य छात्रों के सामाजिक कार्यों में अभिरूचि का तलनात्मक अध्ययन करना।

4. स्काउट्स और सामान्य छात्रों की समायोजन शीलता तथा नैतिक मूल्यों में सहसंबंध ज्ञात करना।

5. स्काउट्स और सामान्य छात्रों के नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक कार्यों में अभिरूचि में संबंध ज्ञान करना।

6. स्काउट एवं सामान्य छात्रों की समायोजन शीलता एवं सामाजिक कार्यों में अभिरूचि के बीच सहसंबंध ज्ञात करना।

अध्ययन के निष्कर्ष :–

1. प्रथम परिकल्पना के आधार पर गणना उपरांत प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि स्काउट प्रशिक्षण एवं अप्रशिक्षित सामान्य छात्रों में कुल समायोजन

के संदर्भ में सार्थक अंतर होता है, क्योंकि जिन छात्रों का चयन स्काउट्स के रूप में होता है, उनमें समायोजन क्षमता सामान्य छात्रों की अपेक्षा अधिक होती है।

2. द्वितीय परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि स्काउट्स प्रशिक्षित छात्रों एवं अप्रशिक्षित छात्रों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर होता है। स्काउट्स प्रशिक्षिण छात्रों के नैतिक मूल्य सामान्य छात्रों की अपेक्षा उच्च होते हैं अर्थात् ईमानदारी, गंभीरता, मानवता व सहनशीलता आदि गुणों की दृष्टि से दोनों समूहों में अंतर पाया गया। यह अंतर निश्चित रूप से स्काउट दल की जनहित की भावना व सतत् प्रशिक्षण व मार्गदर्शन का ही परिणाम है।

3. तृतीय परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों में स्काउट्स तथा सामान्य छात्रों के समूहों के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के छात्रों में सामाजिक कार्यों के प्रति अभिरूचि में सार्थक अंतर है। स्काउट के छात्रों की सामाजिक कार्यों में अभिरूचि अधिक पाई गई। स्काउट प्रशिक्षण का एक मुख्य अंश है। समाज सेवा, स्काउट प्रतिज्ञा में भी सेवा समाहित है ।

4. चतुर्थ परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों में यह स्पष्ट होता है कि स्काउट प्रशिक्षण छात्र एवं सामान्य छात्रों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन शीलता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। अर्थात् जिनके नैतिक मूल्य उच्च होते हैं, आवश्यक नहीं कि वे अपने समाज व परिवेश के साथ समायोजित हो सके।

5. पंचम परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि स्काउट एवं सामान्य छात्रों के नैतिक मूल्य एवं सामाजिक छात्रों के प्रति अभिरूचि में सार्थक सहसंबंध होता है। निश्चित ही चूंकि दोनों ही छात्रों की मानसिक क्षमता, विद्यालय तथा परिवार द्वारा प्रदत्त संस्कारों से संबंध है। इसलिये दोनों में सार्थक सहसंबंध होना स्वाभाविक है।

6. षष्ठम परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि स्काउट प्रशिक्षित छात्र एवं सामान्य छात्रों की समायोजनशीलता एवं सामाजिक कार्यों के

प्रति अभिरूचि में सार्थक सहसंबंध है। चूंकि सामाजिक समायोजन व सामाजिक कार्यों में अभिरूचि दोनों ही चर समाज से संबंधित हैं तथा मुनष्य एक सामाजिक प्राणी है।

मनुष्य का संपूर्ण जीवन समाज में ही व्यतीत होता है। अतः दोनों चरों में सहसंबंध होना स्वाभाविक है।

(7) पंडित (1973) :–

प्रस्तुत शोध में प्रतिभाशाली बालकों की समायोजन समस्याओं एवं असंतोष की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया।

निष्कर्ष :–

1. प्रतिभाशाली बच्चों में कम प्रतिभाशाली बच्चों की अपेक्षा कम समायोजनिक समस्या प्राप्त हुई।

2. दोनों समूहो की बालिका अपने समूह के शेष भाग की अपेक्षा कम समायोजनिक समस्याओं से ग्रसित पाई गयी।

3. प्रतिभाशाली बालिकाएं बालकों की अपेक्षा केवल सामाजिक समायोजन को छोड़कर बाकी सभी क्षेत्र में सुसमायोजित पायी गयी।

4. प्रतिभाशाली बालक बालिकाओं की अपेक्षा अधिक समायोजनिक समस्याओं से ग्रसित पाये गये।

(8) प्रहलाद, 1982)– एन इनवेस्टीगेशन ऑफ दा मोरल जजमेन्ट ऑफ जूनियर कॉलेज स्टूडेन्टस एण्ड देयर रिलेशनशिप विथ दा सोशियो इकोनमिक स्टेटस, इन्टेलिजेस एण्ड परसनालिटी एडजेस्टमेन्ट।

इस अध्ययन के उद्देश्य है :–

1. कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों ने नैतिक निर्णय के स्तर की जांच करना।

2. नैतिक निर्णय और सामाजिक आर्थिक स्थिति के संबंध की जांच करना।

3. नैतिक निर्णय का छात्र के व्यक्तित्व समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन।

4. नैतिक निर्णय के स्तर के संबंध में विज्ञान, कला और वाणिज्य के छात्रों के बीच अंतर की जांच करना।

निष्कर्ष :–

1. संयुक्त राज्य अमेरिका के उच्च विद्यालय और भारत (मैसूर) के जूनियर कॉलेज के छात्रों में नैतिक निर्णय स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

2. एक महत्वपूर्ण अंतर विज्ञान और कला छात्रों में, विज्ञान और वाणिज्य छात्रों में तथा कला और वाणिज्य छात्रों में पाया गया।

3. छात्र और छात्राओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

(9) सारास्वत, (1982)– स्टडी ऑफ सेल्फ कानसेप्ट इन रिलेशन टू एडजेस्टमेन्ट वैल्यूज, एकेडमिक, अचिवमेन्ट,सोशियो इकॉनमिक स्टेटस ऑफ दा हाई स्कूल स्टूडेन्ट ऑफ देहली, ।

इस अध्ययन के उद्देश्य है :–

1. यह अध्ययन छात्र व छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्थिति का समायोजन के साथ आत्म समप्रत्यय के उपायों के संबंधो की जांच करने के लिए किया गया।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के बीच आत्म समप्रत्यय और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के बीच आत्म समप्रत्यय और सामाजिक आर्थिक स्थिति के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।

निष्कर्ष :–

1. छात्रों में आत्म समप्रत्यय सकारात्मक रूप से अधिक सार्थक है छात्राओं की अपेक्षा पाया गया।
2. छात्रों में राजनीतिक, धार्मिक मूल्य अधिक सकारात्मक है जबकि छात्राओं का इस मूल्य से कोई संबंध नहीं है।
3. केवल (बुद्धि) आत्म समप्रत्यय छात्र व छात्राओं में सकारात्मक रूप से सार्थक पाया गया और इसका प्रभाव उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है।

(10) साहने, (1994) – बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व समायोजन एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य :–

1. बाल अपराधी बालकों व सामान्य बालकों में साईकोटिक्स्, एक्स्ट्रावर्सन/इन्ट्रोवर्सन और न्यूरोटिस्म के संबंध में अंतर ज्ञात करना।
2. व्यक्तित्व विशेषताओं के आधार पर उस सीमा को ज्ञात करना जिस सीमा तक बाल अपराधी व सामान्य बालक विभेद रखते हैं।
3. बाल अपराधी व सामान्य बालकों में गृह समायोजन, सामाजिक समायोजन व कुल समायोजन के आधार पर भेद करना।
4. बाल अपराधी व सामान्य बालकों का मूल्य वरीयता के आधार पर विभेद करना।

निष्कर्ष :–

1. बाल अपराधी व सामान्य बालकों में एक्स्ट्रावर्जन/इन्ट्रोवर्जन सामाजिक कुसमायोजन के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया।

2. बाल अपराधी बालकों में निम्न गृह,स्वास्थ्य, सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन पाया गया।

3. बाल अपराधी बालकों के मूल्यों में सामान्य बालकों की तुलना में सार्थक अंतर पाया गया।

(11) एस (2006) :— ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर अवस्था के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय सामंजस्य (कारक, सामाजिक भावनात्मक, शैक्षिक) का तुलनात्मक अध्ययन

उद्देश्य—ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत किशोर अवस्था के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय, सामंजस्य का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष :—

बालक तथा बालिकाओं का विद्यालय में भावनात्मक सामंजस्य में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ जबकि सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर पर सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

12. विद्या (2006) :— ने विद्यार्थियों में तनाव का कारण विद्यालय का समायोजन एवं उसका प्रभाव पर शोध किया है।

उद्देश्य :—

विद्यालय में विद्यार्थियों में तनाव का कारण एवं समायोजन का अध्ययन।

निष्कर्ष :—

शोधों में पाया गया है कि विद्यार्थियों में तनाव का 40 प्रतिशत कारण विद्यालय में समायोजन न होना है।

उपरोक्त साहित्य के सर्वेक्षण से परिलक्षित होता है कि समायोजन क्षमता एवं नैतिक मूल्यों को लेकर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य हुए है लेकिन एन.सी.सी. कैडेट्स व एन.एस.एस. स्वयंसेवकों की समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्य के संदर्भ में कार्य नहीं हुआ है अतः शोधकर्ती ने ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के एन.सी.

सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों एवं सामान्य विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्यों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'' इस शोध समस्या का चयन किया है।

●●●●●●●